Rousseau's Contribution

राजनीतिक विचारों के इतिहास में समानता और सामान्य व्यक्ति में विश्वास की भावना से कोई विचारक इतना घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध नहीं है, जितना कि रूसो। जहाँ उसे एक ओर आधुनिक राजनीतिक चिन्तन को अपने प्रगतिशील योगदान के लिए अतुलनीय प्रशंसा का पात्र समझा गया, वहीं दूसरी तरफ, उसे नगण्य महत्व का घोषित करते हुए अनेक अकल्पनीय घृणा का शिकार भी होना पड़ा है। वॉहन का मानना है कि रूसो ने मानव मन पर अपनी मौलिक प्रतिभा की छाप राजनीतिक साहित्य, शिक्षा और धर्म सभी पर छोड़ी है। वॉहन ने तो यहाँ तक कहा कि "अरस्तु की 'पॉलिटिक्स' के पश्चात सोशल कान्ट्रेक्ट (Social Contract) राज दर्शन पर लिखी हुई सबसे अधिक मौलिक और विचारों की दौड़ में सबसे अधिक समृद्ध रचना है।" वेपर ने रूसो को स्वतंत्रता और लोकतंत्र का अग्रदूत कहा है। उसका अमर वाक्य "मनुष्य स्वतंत्र उत्पन्न होता है, लेकिन सर्वत्र वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है" आज स्वतंत्रता का सिंहनाद है।

स्पष्ट है कि राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में रूसो की अनेक महत्वपूर्ण देन है, जिन्हें हम निम्न रूप में देख सकते हैं:

1. सामान्य इच्छा का सिद्धान्त – राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र रूसो द्वारा प्रतिपादित सामान्य इच्छा का सिद्धान्त उसके राजनीतिक चिन्तन का मूल आधार है। यह इच्छा व्यक्ति और समाज के हित के मध्य समन्वय और संतुलन की प्रतीक है तथा वैयक्तिक स्वार्थ पर सामाजिक स्वार्थ की प्रमुखता प्रदान करती है। यह इच्छा मनुष्य की आदर्श अवस्था और स्वतंत्रता की द्योतक है। यह समाज के सभी सदस्यों की आदर्श इच्छाओं का निचोड़ है जो सम्पूर्ण समाज के लिए अनिवार्य रूप से हितकर है। वेपर ने इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है कि "सामान्य इच्छा सब नागरिकों की इच्छा है जब वे अपने व्यक्तिगत हितों के लिए नहीं वरन् सामान्य हितों के इच्छुक होते हैं। ग्रीन ने तो इसे "सामान्य आदर्शों की सामान्य चेतना कहा है।"

Scanned with CamScanner

2. लोकप्रिय सम्प्रभुता की धारणा - सामान्य इच्छा के सिद्धान्त से भी अधिक महत्वपूर्ण रूसो की 'लोकप्रिय सम्प्रभुता' की धारणा है जो वर्तमान समय की प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था का मूल आधार कहा जा सकता है। रूसो के पूर्व बोदां और हॉब्स जैसे विचारकों ने सम्प्रभुता के सिद्धान्त में योग दिया है, किन्तु इनमें से किसी ने इसका प्रयोग व्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन करने के लिए नहीं किया। किन्तु रूसो ने सम्प्रभुता को सामान्य इच्छा में निहित करके लोकप्रिय सम्प्रभुता के सिद्धान्त प्रादुर्भाव किया। रूसो के सम्प्रभुता की महत्ता इस बात में है कि उसके सम्प्रभुता की धारणा में हॉब्स जैसी पूर्णता और सुनिश्चितता है, किन्तु उसने उसको प्रतिष्ठान जनता में करके व्यक्ति की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा है। उसने किसी भी पूर्व विचारक की अपेक्षा इस बात पर अधिक बल दिया है कि जनता ही समस्त राजनीतिक सत्ता की मूल स्रोत है, सम्प्रभुता जनता की सामान्य इच्छा में निहित है। सरकार सर्वोच्च सत्तावाली जनता की सेवकमात्र है तथा उत्तम शासन और कानून की कसौटी जनहित का सम्पादन ही है। लोकतंत्र की स्थापना की दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखनेवाली फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति जो रूसो की मृत्यु के ग्यारह वर्ष बाद घटित हुई, उसी के विचारों से प्रेरित और प्रभावित थी।

3. व्यक्ति और राज्य में सम्बन्धों का प्रतिपादन - रूसो की एक महत्वपूर्ण देन व्यक्ति और राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों को श्रेष्ठ आधार प्रतिष्ठित करना है। अरस्तू के इस कथन का समर्थन कर कि "मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है तथा उसके नैतिक स्वरूप का विकास केवल समाज में ही हो सकता है।" रूसो ने राज्य और व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धों को नैतिक स्वरूप प्रदान किया तथा व्यक्ति की राज्य के प्रति भक्ति का एक सुदृढ़ आधार स्थापित किया।

Scanned with CamScanner

4. राज्य और सरकार में अन्तर का स्पष्टतापूर्वक प्रतिपादन – रूसो ने राज्य तथा सरकार का अन्तर जितने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है, वैसा अन्य किसी तत्कालीन विचारक में नहीं मिलता। उसने विधियों तथा विधि शासन की श्रेष्ठता प्रतिपादित की, जन-कल्याणकारी विधियों के निर्माण को प्रोत्साहित किया तथा संवैधानिक विधियों के विकास में योग दिया।

5. राष्ट्रीयता की भावना का प्रतिपादन – यद्यपि रूसो राष्ट्रीय राज्य की धारणा का समर्थक नहीं था, परन्तु उसने राज्य की एकता व सुदृढ़ता की भावना का समर्थन कर राष्ट्रभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया।

6. आधुनिक संविधानवाद का संकेत – रूसो ने सर्वसाधारण द्वारा निर्मित कानूनों और सरकार द्वारा जारी किये गये कार्यपालक आदेशों में जो भेद किया है, वह लगभग वैसा ही है जैसा भेद आज संविधानों या संवैधानिक कानूनों और व्यवस्थापिका द्वारा निर्मित साधारण कानूनों में देखा जाता है। रूसो द्वारा किया गया यह भेद आधुनिक संविधान का आधार है और इससे रूसो की राजनीतिक दूरदर्शिता का परिचय मिलता है।

विद्वानों का मानना है कि वर्तमान काल की सभी प्रमुख विचारधाराएँ – समाजवाद, आदर्शवाद तथा लोकतंत्र – के बीज मिलते हैं। वेपर ने ठीक ही कहा है कि "अपनी सबल एवं मौलिक प्रतिभा की छाप उसने राजनीतिक दिशा, धर्म तथा साहित्य पर छोड़ी और लैन्सन के इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि उसे आधुनिक युग को लानेवाले समस्त मार्गों के द्वार पर खड़ा हुआ पाते हैं।

Scanned with CamScanner